आचार्यश्री विद्यानन्दजी मुनिराज को अत्यंत प्रिय सूक्तियाँ

1. **हतं ज्ञानं क्रियाहीनम्।** —तत्त्वार्थराजवार्तिक
   क्रियाहीन ज्ञान व्यर्थ है।
2. **ज्ञानात् त्यागस्त्यागात् शान्तिः।** —पंचाध्यायी
   ज्ञान से त्याग होता है और त्याग से शांति।
3. **न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते।** —गीता
   ज्ञान के समान पवित्र कहीं कुछ नहीं है।
4. **सत्संगः स्वर्गवासः।** —चाणक्य-नीति
   सत्संग तो स्वर्ग का वास है।
5. **धर्मध्यानपरो नरो प्रतिदिनं स स्यात् सदाऽऽरोग्यवान्।** —मंगलाष्टक
   प्रतिदिन धर्मध्यान में तत्पर रहनेवाला सदा नीरोग रहता है।
6. **विद्या-भेषज-मन्त्र-तोय-हवनैर्यान्ति प्रशान्तिं बुधाः।** —दशभक्ति
   ज्ञानी विद्या, औषध, मंत्र, जल, हवन आदि से दुःखों को शांत करते हैं।
7. **तत्त्वज्ञानविहीनानां दुःखमेव हि शाश्वतम्।** —क्षत्रचूड़ामणि
   तत्त्वज्ञान से रहित पुरुष सदा दुःखी रहता है।
8. **संसारोऽपि हि सारः स्यात् दम्पत्योरेककण्ठयोः।** —क्षत्रचूड़ामणि
   यदि पति-पत्नी एककण्ठ हैं तो उनका संसार भी कथंचित् सार है।
9. **ध्यानाग्निः सर्वकर्माणि भस्मसात् कुरुते क्षणात्।**
   ध्यानरूपी अग्नि क्षण भर में सर्वकर्मों को भस्म कर डालती है।
10. **किं किं न साधयति कल्पलतेव विद्या।**
    विद्या कल्पलता के समान है जो क्या-क्या नहीं दे सकती?
11. **श्रेयांसि बहुविघ्नानि।**
    अच्छे कर्मों में बहुत विघ्न आते हैं।
12. **सुखदुःखजीवितमरणोपग्रहाश्च।** —तत्त्वार्थसूत्र
    सुख, दुःख, जीवन, मरण— सभी जीव के उपकार हैं।
13. **वक्तुरेव हि तज्जाड्यं यत्र श्रोता न बुद्ध्यते।**
    यह वक्ता की ही कमी है कि श्रोता कुछ समझ नहीं सके।
14. **अल्पारंभपरिग्रहत्वं मानुषस्य।** —तत्त्वार्थसूत्र
    अल्प आरंभ और परिग्रह से मनुष्य आयु की प्राप्ति होती है।
15. **अलं काकसहस्रेभ्यो एक एव दृषद् भवेत्।** —क्षत्रचूड़ामणि
    हजारों कौओं को उड़ाने के लिए एक ही कंकर पर्याप्त है।
16. **गुरुद्रव्यं गुणवत् ग्राह्यम्।**
    गुरु की वस्तु गुणकारी समझकर ग्रहण करनी चाहिए।
17. **केनाप्युपायेन फलं हि साध्यम्।**
    किसी भी उपाय से फल की सिद्धि करना चाहिए।
18. **उन्नतं मानसं यस्य भाग्यं तस्य समुन्नतम्।**
    जिसका मन ऊँचा है, उसका भाग्य बहुत ऊँचा है।
19. **चित्तमेव हि संसारो रागादिक्लेशवासितम्।**
    रागादि भावों से युक्त चित्त ही संसार है।
20. **न हि विषादो विधेयोऽत्र तद्धि वैदुष्यजं फलम्।** —क्षत्रचूड़ामणि
    विद्वत्ता का फल यही है कि कभी विषाद् न किया जाए।
21. **लोकोऽयं नाट्यशाला।**
    यह दुनिया नाटक के समान है।
22. **सर्वभाषा सरस्वती।** —शंकराचार्य
    सभी भाषाएँ सरस्वती हैं।

23. **आत्मैव गुरुरात्मनः।** —इष्टोपदेश
आत्मा ही आत्मा का गुरु है।
24. **मौनं सर्वार्थसाधकम्।**
मौन सर्व प्रयोजनों को सिद्ध करनेवाला है।
25. **वृद्धा नारी ईश्वरी।** —पद्मपुराण
वृद्धा स्त्री ईश्वर के समान होती है।
26. **अनुकरणप्रियाः शिष्याः/बालाः।**
शिष्य/बालक अपने गुरुजनों का अनुकरण करते हैं।
27. **स्पष्टवक्ता न व चकः।**
स्पष्टवादी धोखा नहीं देता।
28. **परस्परोपग्रहो जीवानाम्।** —तत्त्वार्थसूत्र
सभी जीव परस्पर एक-दूसरे का उपकार करते हैं।
29. **हिताहितप्राप्तिपरिहारसमर्थं हि ज्ञानम्।** —परीक्षामुखसूत्र
हित की प्राप्ति और अहित के परिहार में ज्ञान ही समर्थ है।
30. **धर्मः शुद्धोपयोगः स्यात्।** —पंचाध्यायी
उत्तम धर्म शुद्धोपयोग है।
31. **ज्ञातुरभिप्रायो नयः।**
ज्ञाता के हृदय के अभिप्राय को नय कहते हैं।
32. **आत्माश्रितो निश्चयनयः पराश्रितो व्यवहारनयः।** —आत्मख्याति, 272
आत्माश्रित निश्चयनय है, पराश्रित व्यवहारनय है।
33. **अविचलमेव वस्तुनिष्ठं ज्ञानं ध्यानमिष्यते।** —भगवती आराधना, 1682 टीका
वस्तुनिष्ठ निश्चल ज्ञान को ही ध्यान कहते हैं।
34. **कर्त्तव्यमेव धर्मः।**
कर्त्तव्य ही धर्म है।
35. **आत्मग्राहकं दर्शनं , परग्राहकं ज्ञानम्।** —द्रव्यसंग्रह, गाथा 44
दर्शनोपयोग आत्मग्राहक है और ज्ञानोपयोग परग्राहक है।
36. **एकः शरणं शुद्धोपयोगः।** —प्रवचनसार, 78
शुद्धोपयोग ही एक मात्र शरण है।
37. **चेतनालक्षणो जीवः।** —सर्वार्थसिद्धि
जीव का लक्षण चेतना है।
38. **ज्ञानामृतं भोजनम्।** —भरतेश वैभव
ज्ञानरूपी अमृत ही आत्मा का भोजन है।
39. **शरीरं व्याधिमंदिरम्।**
शरीर व्याधियों का मंदिर है। (5,68,99,584 रोग)
40. **एको देवः सर्वभूतेषु गूढः।** —पंचाध्यायी
एक ही देव (वृषभदेव) सब जगत में गूढ हैं।
41. **सूक्ष्मो भगवद् धर्मो:।** —पुरुषार्थसिद्ध्युपाय, 79
भगवत् प्रणीत धर्म सूक्ष्म है।
42. **अनन्तज्ञानादि शुद्धात्मस्वरूपं साधयन्तीति साधवः।** —धवला 1, पृ. 52
अनंत ज्ञानादि शुद्धात्मस्वरूप को जो साधता है वह साधु है।
43. **रत्नत्रयभावनया स्वात्मानं साधयतीति साधुः।** —प्र.सा. तात्प., गाथा 252
रत्नत्रय की भावना से जो स्वात्मा को साधता है, वह साधु है।
44. **आस्तिक्यम् आत्मविश्वासः।** —रश्मिमाला
जो आत्मा में विश्वास करता है वह आस्तिक है।
45. **परमगाम्भीर्यं सहजा मूर्तिः।**
राग रहित मुखमुद्रा ही परम वीतरागता है।
46. **अहिंसा भूतानां जगति विदितं ब्रह्म परम्।** —स्वयंभूस्तोत्र
अहिंसा ही जीवों का परमब्रह्म है– यह बात जगत में विदित है, प्रसिद्ध है।

47. **अहिंसैव जगन्नमाताऽहिंसैवानन्दपद्धतिः।** —ज्ञानार्णव 8ध्32
अहिंसा ही जगत की माता है और अहिंसा ही आनन्द का मार्ग है।
48. **दानं पारम्पर्येण मोक्षकारणम्।**
दान परम्परा से मोक्ष का कारण है।
49. **गुरुं विना सर्वे भवन्ति पशुसन्निभाः।** —भद्रबाहुचारित्र
गुरु के बिना सब पशुतुल्य है।
50. **विज्ञानस्य फलं सर्वदुःखानां विलयो भवेत्।**
विज्ञान (विशिष्ट ज्ञान) का फल सम्पूर्ण दुःखों की निवृत्ति है।
51. **जिनधर्मो जगद्बन्धुः।**
जिनधर्मो जगत् का बन्धु है।
52. **न हि कृतमुपकारं साधवो विस्मरन्ति।** —गोम्मटसार—टीका
साधु पुरुष किए हुए उपकार को कभी नहीं भूलते।